International Journal of Academic Research
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]
P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026

प्रवासी व्यंग्यकार धर्मपाल महेंद्र जैन की रचनाओं में आत्मनिर्भरता

काकर मुत्यालराव
प्रोफेसर नल्ला सत्यनारायण, आंध्रविश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश

प्रस्तावना:

हिन्दी प्रवासी साहित्य हिन्दी के विराट संसार का अंग है। उसने अपनी विशिष्ट संवेदना दृष्टिकोण, परिस्थिति, और सृजन प्रक्रिया रूप प्रदान करके हिन्दी-संसार में अपना योगदान किया है, हिन्दी साहित्य में यह प्रवासी हिन्दी साहित्य संवेदना, परिवेश और सरोकार में एकदम भिन्न हैं, क्योंकि उनकी चिंताएं, समस्याएं, तथा संघर्ष भारत के लेखक से भिन्न है। इस प्रकार हिन्दी प्रवासी साहित्य दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं-एक तो वह अपनी मौलिकता और विशिष्टता रखता है, और हिन्दी साहित्य में कुछ नया जोड़ता है, दूसरे वह हिन्दी साहित्य को वैश्विक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रखता है।

प्रवासी व्यंग्य हिंदी साहित्य की एक ऐसी विधा है जो विदेशों में बसे भारतीयों (डायस्पोरा) के दृष्टिकोण से भारत और विदेश के जीवन, संस्कृति, और विसंगतियों पर प्रहार करती है। यह व्यंग्य न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि प्रवासी जीवन की पीड़ा, पहचान का संकट, और दोनों संस्कृतियों के बीच द्वंद्व को भी सामने लाता है।

प्रवासी साहित्य और हिंदी व्यंग्य के क्षेत्र में **धर्मपाल महेंद्र जैन** एक जाना-माना नाम है। वे मुख्य रूप से कनाडा के टोरंटो में रहकर हिंदी साहित्य की सेवा कर रहे हैं। वे भारत और प्रवासी जीवन के अनुभवों को जोड़ते हैं। जैन जी की रचनाओं में व्यंग्य और अनेक विषयों के साथ-साथ आत्मनिर्भरता भी झलकती है।

आत्मनिर्भरता की व्याख्या

'आत्मनिर्भरता' का सरल अर्थ है—अपने आप पर निर्भर रहना। जब कोई व्यक्ति, समाज या राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों का मुँह ताकने के बजाय अपने स्वयं के संसाधनों, कौशल और परिश्रम पर भरोसा करता है, तो उसे आत्मनिर्भरता कहते हैं। यह केवल आर्थिक शब्द नहीं है, बल्कि यह एक मानसिक अवस्था और आत्मसम्मान का प्रतीक है।

आत्मनिर्भरता के विभिन्न आयाम

व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता: इसका अर्थ है कि व्यक्ति अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले और अपनी जीविका के लिए खुद को कुशल बनाए।

आर्थिक आत्मनिर्भरता: स्थानीय उद्योगों, कृषि और व्यापार को बढ़ावा देना ताकि धन का प्रवाह देश के भीतर ही रहे।

तकनीकी आत्मनिर्भरता: आधुनिक युग में तकनीक का बहुत महत्व है। नई खोजें (Innovation) और अनुसंधान (Research) के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना अनिवार्य है।

इन विविध आयामों के तौर पर धर्मपाल जैन जी ने अपनी अलग अलग रचनाओं में अलग ही रूप से आत्मनिर्भरता को दर्शाया है।

गणतंत्र के तोते में मानसिक आत्मनिर्भरता का अभाव

इस व्यंग्य रचना में जैन ने भारतीय लोकतंत्र की विडंबना को "तोते" के प्रतीक के माध्यम से प्रस्तुत किया है। नागरिक बिना सोचे-समझे वही दोहराते हैं जो उन्हें सिखाया जाता है। सत्ता और मीडिया द्वारा निर्मित विचारों को ही सत्य मान लिया जाता है।

यहाँ "तोता" प्रतीक है—

अंधअनुकरण का
विचारहीनता का
मानसिक पराधीनता का

इस रचना के माध्यम से जैन यह संदेश देते हैं कि—

"जब तक व्यक्ति अपनी सोच विकसित नहीं करता, तब तक वह लोकतंत्र में भी स्वतंत्र नहीं है।" अतः यह रचना मानसिक आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

दिमाग वाले सावधान : बौद्धिक आत्मनिर्भरता का संकट

इस व्यंग्य में जैन उस समाज पर कटाक्ष करते हैं जहाँ सोचने-समझने वाले व्यक्तियों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। भीड़ का अनुसरण करने वाले लोग सुरक्षित माने जाते हैं। स्वतंत्र विचार रखने वाला व्यक्ति असहज और असुरक्षित हो जाता है। यह स्थिति बौद्धिक आत्मनिर्भरता के संकट को दर्शाती है। जैन यह बताना चाहते हैं कि—

समाज में मौलिक सोच का अभाव है

लोग स्वयं निर्णय लेने से डरते हैं

इस प्रकार, यह रचना यह स्थापित करती है कि आत्मनिर्भरता का मूल आधार स्वतंत्र और तार्किक सोच है।

नंबरों वाली तिजोरी : बाहरी मानकों पर निर्भरता

इस व्यंग्य में जैन आधुनिक समाज की उस प्रवृत्ति पर प्रहार करते हैं जिसमें व्यक्ति की पहचान "नंबरों" से तय होती है—

परीक्षा के अंक

आर्थिक स्थिति

सामाजिक प्रतिष्ठा

यहाँ "तिजोरी" प्रतीक है उस मानसिकता का, जिसमें व्यक्ति अपनी वास्तविक क्षमता को भूलकर बाहरी मानकों पर निर्भर हो जाता है। जैन का संदेश स्पष्ट है—

आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल आर्थिक समृद्धि नहीं है बल्कि आत्ममूल्य और आत्मविश्वास का विकास है।

प्रवासी दृष्टि और आत्मनिर्भरता

धर्मपाल महेंद्र जैन की प्रवासी पृष्ठभूमि उनके लेखन को एक विशेष दृष्टिकोण प्रदान करती है। वे भारतीय समाज को बाहरी दृष्टि से देखते हैं उसकी कमजोरियों को अधिक स्पष्ट रूप से पहचानते हैं।

प्रवासी अनुभव के कारण वे यह महसूस करते हैं कि—

भारतीय समाज में आत्मनिर्भरता की कमी है।

लोग परंपराओं, रूढ़ियों और सत्ता पर अत्यधिक निर्भर हैं।

इस दृष्टि से उनका व्यंग्य केवल आलोचना नहीं, बल्कि सुधार की दिशा में एक संकेत है।

व्यंग्य के माध्यम से आत्मनिर्भरता का संदेश

जैन का व्यंग्य उपदेशात्मक नहीं है, बल्कि प्रेरणात्मक है। वे— हास्य और कटाक्ष के माध्यम से सोचने पर मजबूर करते हैं। पाठक को स्वयं निष्कर्ष निकालने का अवसर देते हैं

उनकी रचनाओं में आत्मनिर्भरता का संदेश इस प्रकार निहित है—

1. अंधअनुकरण का विरोध
2. स्वतंत्र चिंतन का समर्थन
3. नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना
4. आत्मविश्वास का विकास

निष्कर्ष

धर्मपाल महेंद्र जैन का व्यंग्य साहित्य आत्मनिर्भरता की एक व्यापक और गहन अवधारणा प्रस्तुत करता है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि— आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक नहीं, बल्कि मानसिक, बौद्धिक और नैतिक स्तर पर भी आवश्यक है।

समाज की सबसे बड़ी समस्या उसकी निर्भर मानसिकता है और इसका समाधान स्वतंत्र सोच, विवेक और आत्मविश्वास में निहित है।

इस प्रकार, जैन का साहित्य न केवल सामाजिक विसंगतियों का चित्रण करता है, बल्कि एक जागरूक, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर समाज की कल्पना भी प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची (References)

1. गणतंत्र के तोते
2. दिमाग वाले सावधान
3. नंबरों वाली तिजोरी
4. हिंदी व्यंग्य साहित्य के विभिन्न आलोचनात्मक ग्रंथ
5. प्रवासी हिंदी साहित्य पर आधारित शोध आलेख एवं पत्रिकाएँ प्रवासी व्यंग्यकार धर्मपाल महेंद्र जैन के साहित्य में आत्मनिर्भरता की अवधारणा